



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

खम्मा घणी!!

अंक-05

अप्रैल-जून तिमाही 2024



नव निदेशक: नव प्रेरणा विशेषांक

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंदी !

निदेशक महोदय की कलम से



मुझे हिंदी पत्रिका “खम्मा घणी” के जून 2024 अंक को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। इस प्रतिष्ठित संस्थान के निदेशक का पदभार संभालने के बाद, यह इस हिंदी पत्रिका का पहला अंक है। मैंने इसके पिछले अंक भी देखे हैं तथा सभी अंको में बेहतरीन सामग्री को इन पत्रिकाओं में शामिल किया गया है। इस पत्रिका में हिंदी प्रकोष्ठ तथा अन्य प्रकाशन मंडल के सभी सदस्यों द्वारा किये गये प्रयासों का सुंदर चित्रण है। यह दिन-प्रतिदिन की आधिकारिक गतिविधियों के द्वारा राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन और विस्तार की दिशा में हमारे प्रयासों को दर्शाता है।

संस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2024 के अनुरूप इस वर्ष से प्रौद्योगिकी प्रथम वर्ष की कक्षा के इच्छित छात्रों को हिन्दी में पढ़ाया जा रहा है। मैं प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम को पूर्ण रूप से भारतीय भाषाओं में पढ़ाने का पक्षधर हूँ। इससे हिन्दी भाषा में शिक्षण प्राप्त करने वाले छात्रों को पाठ्यक्रम को समझने में सहायता मिलेगी। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा भी मातृभाषा में प्रदान करने से छात्रों को समझने में आसानी होगी तथा इससे छात्रों की तकनीकी कुशलता, विचारों में मौलिकता एवं नवाचार के सामर्थ्य में विकास होगा जिससे उनकी रोजगार योग्यता बेहतर होगी। जो भी छात्र हिन्दी भाषा में पढ़ाई करेंगे वह अपने क्षेत्र एवं देश के विकास की दिशा में अपनी भागीदारी रख सकेंगे। मैं इस संस्थान और हिन्दी के प्रचार प्रसार की बेहतरी के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने का प्रयास कर रहा हूँ।

मैं हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करता हूँ। इस सुन्दर अंक के लिए आप सभी को शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ। हम अपने जीवन के हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने का प्रयास करते रहेंगे।

जय हिंद, जय भारत।

प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल
निदेशक



सत्यमेव जयते



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

जगदीश राम पौरी
निदेशक (राजभाषा)

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
शास्त्री भवन
नई दिल्ली - 110 115
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF EDUCATION
DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION
SHASTRI BHAVAN
NEW DELHI-110 115

संदेश

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर त्रैमासिक पत्रिका 'खम्मा घणी' के पाँचवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका के साथ-साथ संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में अत्यंत प्रशंसनीय कार्य किये जा रहे हैं।

संस्थान में राजभाषा हिंदी की प्रगामी प्रयोग से संबंधित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। तकनीकी हिंदी संगोष्ठी का सफल आयोजन और अंशकालिक हिंदी टंकण प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना एक अनुकरणीय उदाहरण हैं। संस्थान द्वारा प्रौद्योगिकी स्नातक के प्रथम वर्ष के विषयों का हिंदी में पठन-पाठन हेतु लिया गया निर्णय अत्यंत सराहनीय कदम है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन की मेजबानी भी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर द्वारा की गई, जो संस्थान द्वारा हिंदी के प्रति प्रेम और सहभागिता की ओर अग्रणी कदमों का द्योतक है।

हिंदी भाषा सदियों से हमारी सांस्कृतिक धरोहर की परिचायक रही है। यह स्वयं में सहजता, सरलता एवं स्पष्टता के गुणों के कारण अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम रही है। हिंदी भाषा के मौखिक एवं लिखित, दोनों स्वरूप समान भाव के परिचायक है। संविधान में राजभाषा हिंदी के विभिन्न प्रावधानों के अनुरूप हिंदी के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी हम सभी की है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार में 'खम्मा घणी' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशित किया जाना एक सराहनीय प्रयास है। इसे कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा के प्रस्तुतिकरण के साथ-साथ हिंदी कार्य के प्रति प्रेरित करने के माध्यम के रूप में भी अपनाया जा सकता है।

मैं खम्मा घणी पत्रिका के संपादक मंडल एवं सभी संबंधित कार्मिकों को इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में किए जा रहे सराहनीय कार्य हेतु विशेष बधाई देता हूँ और पत्रिका की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभेच्छु,

11/7/24
(जगदीश राम पौरी)

मुख्य संरक्षक

प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल
निदेशक / अध्यक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक

प्रो. संपत राज वडेर
उप निदेशक / उपाध्यक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादक मंडल

डॉ. विवेक विजय,
सह-आचार्य,
गणित विभाग

डॉ. जय नारायण त्रिपाठी,
सहायक आचार्य,
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. आकांक्षा चौधरी,
सहायक आचार्य,
स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स

डॉ. अंकुर गुप्ता,
सह-आचार्य,
यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

डॉ. नितिन भाटिया,
हिंदी अधिकारी
सह-आचार्य,
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

सम्पादकीय

हमें हिंदी पत्रिका खम्मा घणी का यह पाँचवां संस्करण प्रकाशित करते हुए अत्यंत खुशी हो रही है। इसी तिमाही के दौरान संस्थान में नये निदेशक महोदय प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने पदभार ग्रहण किया है। यह विशेषांक संस्थान के नव नियुक्त निदेशक के कार्यभार ग्रहण करने को समर्पित है। निदेशक महोदय के लंबे सेवाकाल के अनुभव का लाभ संस्थान तथा हम सभी को होगा और हमें अपने कार्यों को बेहतर तरीके से करने की प्रेरणा मिलेगी।

पूर्व के अंकों की ही भांति इस अंक में भी संक्षेप में संस्थान की विविध गतिविधियों को सहेजने का प्रयत्न किया गया है। संस्थान की सभी गतिविधियों को कुछ ही पृष्ठों में समेटना संभव नहीं है अतः कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियों को ही इस अंक में सम्मिलित किया जाता रहा है।

इस अंक में सम्मिलित लेखों के चयन के लिए जनसंपर्क अधिकारी कार्यालय तथा संस्थान के अन्य कार्यालयों से सहायता ली गई है। इसके लिए सभी का आभार। संपादकीय दल के सभी साथियों को भी धन्यवाद जिनके प्रयासों से इस पत्रिका को यह रूप मिल सका। आगे जारी किये जाने वाले संस्करणों की बेहतरी के लिए आप सभी के सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

डॉ. नितिन भाटिया
हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01.	प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला	07
02.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में हिंदी में बी.टेक. प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम शिक्षण	12
03.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) ने पोखरण-I की 50 वीं वर्षगाँठ मनाई	12
04.	प्रौद्योगिकी दिवस समारोह का आयोजन	14
05.	सी.एन.आर.एस. और यूनिवर्सिटी-ल्योन, फ्रांस के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता बैठक	17
06.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के प्रोफेसर मनोज चौधरी 'मारवाड़ रत्न' से सम्मानित	18
07.	बेले II अंतर्राष्ट्रीय मास्टरक्लास कार्यक्रम 2024 का उद्घाटन सत्र	19
08.	तकनीकी शोध - सुदूर सौर पैनल इंस्टॉलेशन के लिए अत्याधुनिक ईवी चार्जिंग एडाप्टर	21
09.	विश्व स्वास्थ्य दिवस पर संगोष्ठी	23
10.	विश्व पर्यावरण दिवस पर वर्चुअल पैनल चर्चा	24
11.	विश्व पृथ्वी दिवस पर संगोष्ठी	24
12.	विश्व साइकिल दिवस	25
13.	कैनसैट इंडिया में नेक्ससैट का शानदार प्रदर्शन	26
14.	अंबेडकर जयन्ती कार्यक्रम	27
15.	विश्व योग दिवस	28
16.	"कानून और प्रौद्योगिकी में उभरती चुनौतियों पर कार्यशाला"	30
17.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के आईहब दृष्टि (iHub Drishti) फाउंडेशन और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की साझेदारी	31
18.	डीआरडीओ-उद्योग-शैक्षणिक उत्कृष्टता केंद्र (DIA- CoE) का उद्घाटन	32
19.	"सिंधी सारंगी" को भौगोलिक संकेत (GI) टैग	33
20.	उपलब्धियाँ	34
21.	कविताएँ	34
22.	अप्रैल 2024 से जून 2024 के दौरान संस्थान में शामिल होने वाले नये सदस्य	38

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र – office_hindi@iitj.ac.in **दूरभाष** - +91 291 2801199

संकलन - अशोक कुमार खण्डूड़ी, संयुक्त कुलसचिव, अश्वनी कुमार गुप्ता, तकनीकी संचार प्रबंधक

अनुवाद - अशोक गहलोत, कनिष्ठ अधीक्षक एवं सुरेश कुमार, कनिष्ठ सहायक

कवर डिजाइन- शिखा पाराशर, डिजिटल कॉन्टेन्ट डिजाइनर, शुभम अरोड़ा, डिजिटल कॉन्टेन्ट डिजाइनर

प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला

प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने 01 मई 2024 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। प्रोफेसर अग्रवाल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं।



प्रोफेसर अग्रवाल ने जयपुर के मालवीय क्षेत्रीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय से यांत्रिकी अभियांत्रिकी में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली से एम.टेक. और पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। तदोपरान्त इंजन रिसर्च सेंटर, विसकोंसन विश्वविद्यालय, मैडिसन, संयुक्त राज्य अमेरिका से अपनी पोस्ट-डॉक्टरल फेलोशिप पूरी करने के पश्चात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में कार्यभार ग्रहण किया। यहाँ उन्होंने अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रोफेसर अग्रवाल ने अपने पूरे सेवाकाल के दौरान आंतरिक दहन इंजन (इंटरनल कम्बशन इंजन), वैकल्पिक ईंधन और उत्सर्जन नियंत्रण (एमिशन कंट्रोल) सहित विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। इनका यांत्रिकी अभियांत्रिकी, ऊर्जा और वहनीयता (Sustainability) क्षेत्रों में दशकों का अनुभव रहा है। उनका व्यापक प्रकाशन अभिलेख, कई पुरस्कार और कई प्रतिष्ठित फेलोशिप, अभियांत्रिकी एवं नवाचार में उत्कृष्टता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए भारत सरकार की शीर्ष एजेंसी, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने उन्हें 2016 में अभियांत्रिकी विज्ञान में उनके योगदान के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए 'शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार' से सम्मानित किया। प्रोफेसर अग्रवाल को विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड, भारत सरकार (अगस्त 2019) की प्रतिष्ठित जे.सी. बोस फेलोशिप से भी सम्मानित किया गया है। वेब ऑफ साइंस की एक शाखा क्लेरिवेट एनालिटिक्स के अनुसार, प्रोफेसर अग्रवाल भारत में 2018 के शीर्ष दस उच्च उद्धृत शोधकर्ताओं (HCRs-Highly Cited Researchers) में शामिल हैं।

प्रोफेसर अग्रवाल ने ऑटोमोटिव आकारों में लेजर से चलने वाले हाइड्रोजन और सी.एन.जी. इंजन विकसित किए हैं। उन्होने भारतीय रेलवे के लिए लोकोमोटिव इंजन से सुसज्जित पहला इलेक्ट्रॉनिक ईंधन इंजेक्शन सिस्टम विकसित किया है। वर्तमान में प्रोफेसर अग्रवाल ऑटोमोटिव एवं कृषि क्षेत्रों के लिए मथनॉल और डीएमई- ईंधन वाले इंजन/वाहन विकसित कर रहे हैं। प्रोफेसर अग्रवाल ने 520 से अधिक सहकर्मी-समीक्षित अंतरराष्ट्रीय जर्नल और सम्मेलन पत्र, 63 संपादित पुस्तकें और 129 पुस्तक अध्याय प्रकाशित किए हैं, जिनमें 16000 से अधिक स्कोपस और 24000 से अधिक गूगल स्कॉलर उद्धरण शामिल हैं। प्रोफेसर अग्रवाल 'फ्यूल' पत्रिका के संपादक, जर्नल ऑफ एनर्जी एंड एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी के प्रधान संपादक, ए.एस.एम.ई. जर्नल ऑफ एनर्जी रिसोर्सेज टेक्नोलॉजी के सह-संपादक, ए.एस.एम.ई. ओपन जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ व्हिकल सिस्टम्स मॉडलिंग और परीक्षण, इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स के जर्नल (श्रंखला सी) एवं IMechE इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजन रिसर्च के संपादकीय बोर्ड के सदस्य है। उन्होंने विले वी.सी.एच., जर्मनी की "हैंडबुक ऑफ कम्बशन" का संपादन किया है, जो विश्व स्तर पर कम्बशन पर सबसे अद्यतन संकलन है।

प्रोफेसर अग्रवाल जर्नल "फ्यूल" के एसोसिएट प्रिंसिपल एडिटर, जर्नल ऑफ एनर्जी एंड एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी (जे.ई.ई.एस.) के प्रधान संपादक हैं इसके साथ वह दो अन्य पत्रिकाओं, "ए.एस.एम.ई. जर्नल ऑफ एनर्जी रिसोर्सेज टेक्नोलॉजी" और "जर्नल ऑफ द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया): सीरीज सी" के सह संपादक हैं। प्रोफेसर अग्रवाल कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य हैं जैसे "एस.ए.ई. इंटरनेशनल और आई.एम.ई.सी.ई., लंदन, यू.के. द्वारा प्रकाशित इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजन रिसर्च", इंस्टीट्यूशन ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स की कार्यवाही, भाग डी: जर्नल ऑफ ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग और बेंथम साइंस के मैकेनिकल इंजीनियरिंग पर हालिया पेटेंट।

प्रोफेसर अग्रवाल इंटरसाइंस पब्लिशर्स के इंटरनेशनल जर्नल ऑफ व्हीकल सिस्टम्स मॉडलिंग एंड टेस्टिंग के पूर्व एसोसिएट एडिटर भी हैं। "इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ऑयल, गैस एंड कोल टेक्नोलॉजी" (आई.जे.ओ.जी.सी.टी.), इंटरसाइंस पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित और 2007 में जर्नल ऑफ ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग के वैकल्पिक ईंधन पर विशेष अंक के अतिथि-संपादक भी हैं। उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रोफेसर अग्रवाल को विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं।

- ◆ डीएसटी युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-2002
- ◆ डीएसटी बॉयकास्ट फेलोशिप 2002
- ◆ युवा शिक्षकों के लिए एआईसीटीई करियर पुरस्कार-2004
- ◆ आईएनईई युवा इंजीनियर पुरस्कार-2005
- ◆ आईएनएसए युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-2007
- ◆ यूआईसीटी युवा वैज्ञानिक पुरस्कार-2007
- ◆ एसएई राल्फ आर. टीटर शैक्षिक पुरस्कार-2008
- ◆ डॉ. सीवी रमन युवा शिक्षक पुरस्कार-2011
- ◆ देवेंद्र शुक्ला रिसर्च फेलोशिप-2009-12
- ◆ एनएसआई-रिलायंस इंडस्ट्रीज प्लेटिनम जुबली पुरस्कार-2012
- ◆ आईएनईई सिल्वर जुबली युवा इंजीनियर पुरस्कार-2012
- ◆ पूनम और प्रभु गोयल एंडॉव्ड चेयर प्रोफेसरशिप-2013-16
- ◆ भौतिक विज्ञान में राजीव गोयल पुरस्कार-2015
- ◆ इंजीनियरिंग विज्ञान में प्रतिष्ठित शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार-2016
- ◆ इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में क्लेरिफेट एनालिटिक्स इंडिया प्रशस्ति पत्र पुरस्कार-2017
- ◆ एसआईआरबी द्वारा सर जेसी बोस राष्ट्रीय फेलोशिप-2019
- ◆ एसएई इंडिया फाउंडेशन गुरु पुरस्कार-2022
- ◆ डब्ल्यूएसएसईटी इनोवेशन अवार्ड-2022
- ◆ भा.प्रौ. सं. कानपुर में एसबीआई एंडॉव्ड चेयर प्रोफेसरशिप-2018-21, 2022-25

प्रोफेसर अग्रवाल हाल ही में घोषित स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की वैश्विक स्तर पर शीर्ष 2% शोधकर्ताओं की सूची में भारत के ऊर्जा विषय पर शोधकर्ता हैं। वह सोसाइटी ऑफ ऑटोमोटिव इंजीनियर्स इंटरनेशनल, यू.एस.ए. (एसएई; 2012), अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स (एसएमई; 2013), इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग (आईएनईई; 2015), इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी (आईएसईईएस; 2016), रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री (आरएससी; 2018), नेशनल एकेडमी ऑफ साइंस इलाहाबाद (एनएसआई ; 2018) वर्ल्ड सोसाइटी ऑफ सस्टेनेबल एनर्जी टेक्नोलॉजी (डब्ल्यूएसएसईटी-2020) अमेरिकन एसोसिएशन फॉर एडवांसमेंट इन साइंस (ए.ए.एस 2020) ओर कम्बिनेशन संस्थान यूएसए (सीआई; 2022) के सदस्य हैं। उन्हें राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 2022 को भारत सरकार के विज्ञान प्रसार द्वारा जारी डीएसटी गोल्डन जुबली कॉफी टेबल बुक "75 अंडर 50 साइंटिस्ट शेपिंग टुडे इंडिया" में शामिल किया गया है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में प्रोफेसर अग्रवाल ने एक अत्याधुनिक "इंजन रिसर्च लेबोरेटरी" (www.iitk.ac.in/cerl) की स्थापना की है, और वह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के विज्ञान और प्रौद्योगिकी अनुसंधान पार्क (Technopark@iitk ; <http://www.technopark.iitk.com>) के संस्थापक-निदेशक पद पर भी आसीन रहे हैं। उन्होंने 2014 में इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर एनर्जी एनवायरनमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी (www.isees.in) की भी स्थापना की। प्रोफेसर अग्रवाल 'स्प्रिंगर', सिंगापुर (2016 से) द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्रृंखला "एनर्जी एनवायरनमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी" के संपादक हैं।

प्रोफेसर अग्रवाल ने 2002 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की BOYSCAST फेलोशिप और 2009 में भा.प्रौ.सं. कानपुर के देवेन्द्र शुक्ला रिसर्च फेलोशिप प्राप्त की। उन्हें 2015 में भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी द्वारा फेलो चुना गया। वह अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स और एसएई इंटरनेशनल, रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री, इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज और इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड सस्टेनेबिलिटी के भी फेलो हैं। उन्हें "माकिव्स हूज हू इन साइंस एंड इंजीनियरिंग", "हूज हू (इमर्जिंग लीडर्स)" और "हूज हू इन द वर्ल्ड" के कई संस्करणों में सूचीबद्ध किया गया है। प्रोफेसर अग्रवाल 2012 से 2016 तक भा.प्रौ.सं. कानपुर में पूनम और प्रभु गोयल चेयर प्रोफेसर पद पर रहे हैं। प्रोफेसर अग्रवाल के शोध में इंजन कम्बर्शन, वैकल्पिक ईंधन, उत्सर्जन और कण नियंत्रण (Emissions and particulate control), ऑप्टिकल निदान (Optical Diagnostics), मेथनॉल इंजन विकास, ईंधन स्प्रे अनुकूलन और ट्राइबोलॉजी के क्षेत्र शामिल हैं। उनके शोध कार्य ने कम लागत वाले डीजल ऑक्सीकरण उत्प्रेरक (Diesel Oxidation Catalyst) और सजातीय चार्ज संपीड़न इग्निशन इंजन (Homogeneous charge compression ignition engine) के विकास में सहायता की है। भारतीय फीडस्टॉक्स पर आधारित मीथेन-वायु हाइड्रोजन-वायु मिश्रण और बायोडीजल के लेजर इग्निशन के उनके अध्ययनों ने इन विषयों पर वैज्ञानिक समझ को व्यापक बनाया है। उन्होंने भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के लिए 2010-13 के दौरान बायोडीजल पर एक परियोजना को अंजाम दिया। उन्होंने 280 से ज्यादा लेखों के ज़रिए अपने शोध को दर्ज किया है। वैज्ञानिक लेखों के ऑनलाइन भंडार, गूगल स्कॉलर और रिसर्चगेट ने उनमें से कई को सूचीबद्ध किया है। इसके अलावा, उन्होंने चालीस से अधिक पुस्तकों का संपादन किया है, जिनमें से अधिकांश 'स्प्रिंगर' द्वारा प्रकाशित की गई हैं, जिनमें 'विद्युत उत्पादन और परिवहन दहन' और 'सतत ऊर्जा विकास के लिए नवीन दहन अवधारणाएँ' (Novel Combustion Concepts for Sustainable Energy Development) शामिल हैं।

वह 2017 से विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के मेथनॉल टास्क फोर्स के सदस्य हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के प्रौद्योगिकी प्रणाली समूह के पूर्व सदस्य और भारत सरकार के जैव ईंधन और इंजनों के पुनःसंयोजन (Retrofitting) पर विशेषज्ञ समूह के पूर्व सदस्य हैं। अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग के आंतरिक दहन इंजन (Internal Combustion Engine) प्रभाग के सहयोगी बोर्ड के सदस्य हैं और एस.ए.ई. इंटरनेशनल से जुड़े हैं। प्रोफेसर अग्रवाल एस.ए.ई. वर्ल्ड कांग्रेस के 2005, 2006, 2007, 2008 और 2009 संस्करणों के लिए सत्र आयोजक थे और वैकल्पिक ईंधन और आंतरिक दहन इंजन पर 2004, 2005 और 2006 के सत्रों की अध्यक्षता की थी।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में प्रोफेसर अग्रवाल 2012 से प्रोफेसर पद पर संस्थान की सेवा कर रहे हैं। इस अवधि के दौरान उनके पास विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में विदेश में सात छोटे कार्यकाल थे, पहले 2002 में लॉफबोरो विश्वविद्यालय के वोल्फसन स्कूल ऑफ मैकेनिकल एंड मैनुफैक्चरिंग इंजीनियरिंग में, इसके उपरांत 2004 और 2013 में वियना के तकनीकी विश्वविद्यालय के फोटोनिक्स संस्थान में। 19 अप्रैल 2024 को उन्हें भा.प्रौ.सं. जोधपुर का निदेशक नियुक्त किया गया।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर के नए निदेशक के रूप में, प्रोफेसर अग्रवाल नवाचार, सहयोग और उत्कृष्टता का दृष्टिकोण लेकर आए हैं। उनका मिशन संस्थान के शैक्षणिक कार्यक्रमों को और बढ़ाना, नए अनुसंधान केंद्र स्थापित करना और एक ट्रांसडिसिप्लिनरी अनुसंधान मॉडल को बढ़ावा देना है, जिससे राष्ट्र के दृष्टिकोण के अनुरूप प्रमुख चुनौतियों का समाधान किया जा सके। इसके अतिरिक्त, प्रोफेसर अग्रवाल के नेतृत्व में भा.प्रौ.सं. जोधपुर, राजस्थान में वहनीयता (Sustainability) प्रयासों का समर्थन करने, जल प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आगामी वर्षों में भा. प्रौ. सं. जोधपुर रक्षा प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाने में योगदान देगा, राष्ट्रीय रक्षा के लिए नीति-निर्माण में भाग लेगा और जोधपुर शहर के लिए शहरी नियोजन पहल में सम्मिलित होगा। रचनात्मकता और उद्यमिता के माहौल को बढ़ावा देने पर ध्यान देने के साथ, प्रोफेसर अग्रवाल का लक्ष्य भा.प्रौ.सं. जोधपुर को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सफलता की नई ऊंचाइयों पर ले जाना है।

प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल को निदेशक के रूप में उनकी नियुक्ति पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के समस्त कार्मिक हार्दिक बधाई देते हैं और उनके नेतृत्व में निरंतर विकास और उत्कृष्ट भविष्य की आशा करते हैं।



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के नवनियुक्त निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल का स्वागत एवं उनके द्वारा संस्थान के कार्मिकों को संबोधन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में हिंदी में बी.टेक. प्रथम वर्ष पाठ्यक्रम शिक्षण

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में बी.टेक. प्रथम वर्ष का पाठ्यक्रम अब अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी पढ़ाया जाएगा। इसके लिए अभिषद ने 26 जून 2024 को आयोजित 38वीं बैठक में संकल्प संख्या 38.2.8 के तहत हिंदी और अंग्रेजी में पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के प्रस्ताव को अनुमति दी है। अभिषद ने यह स्वीकार किया कि प्रौद्योगिकी, विज्ञान, मानविकी और प्रबंधन के क्षेत्र में भा.प्रौ.सं. जोधपुर के अग्रणी होने के नाते यह अपेक्षा की जाती है कि छात्रों की सहायता के लिए मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करे, जो अपर्याप्त अंग्रेजी दक्षता के कारण सीखने में चुनौतियों का सामना करते हैं। जिन छात्रों का स्कूली शिक्षण माध्यम हिंदी रहा है, उन्हें पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में अंग्रेजी माध्यम में आने वाली परेशानियों को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुपालना में यह कदम सहायक सिद्ध होगा। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर का यह कदम आने वाले समय में तकनीकी शिक्षा में मील का पत्थर साबित होगा।

इस हेतु कक्षाएं शुरू होने से पहले, बी.टेक. प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा दी गई प्राथमिकताओं के आधार पर हिंदी/अंग्रेजी व्याख्यानों के लिए दो अनुभागों की पहचान की जाएगी। शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में समान परिपूर्णता सुनिश्चित करने के लिए प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रमों में अंग्रेजी और हिंदी दोनों खंड एक ही प्रशिक्षक द्वारा पढ़ाए जाएंगे।

अभिषद की 35वीं बैठक में दिनांक 12 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत बी.टेक. प्रथम वर्ष के विभिन्न पाठ्यक्रमों की पठन सामग्री का द्विभाषीकरण किये जाने हेतु निर्देशित किया। इस संदर्भ में संस्थान के शैक्षणिक विभागों / स्कूलों / केंद्रों द्वारा इस कार्य के कार्यान्वयन में तेजी लाते हुए विषय वस्तु का द्विभाषीकरण करने का कार्य किया जा रहा है। संकाय सदस्यों के द्वारा भी हिंदी में पाठ्य सामग्री विकसित किये जाने का कार्य किया जा रहा है। साथ ही हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा इस हेतु आउटसोर्स आधार पर एक तकनीकी शब्दावली विशेषज्ञ को भी इस कार्य के लिए नियुक्त किया गया है। पाठ्यक्रम सामग्री के अनुवाद हेतु वैज्ञानिक और तकनीकी आयोग द्वारा प्रकाशित तकनीकी शब्दावली की पुस्तकों की अवाप्ति की गई है, जिनका उपयोग अनुवाद करते समय आसानी से समझने लिए किया जा सकता है। विभाग स्तर पर समन्वयकों की नियुक्ति की गई है जो विभाग एवं हिंदी प्रकोष्ठ के साथ समन्वय बनाते हुए पाठ्यक्रम के द्विभाषीकरण के कार्य की निगरानी रखेंगे।

- हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।
- राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।
- अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है, और हिन्दी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) ने पोखरण-I की 50 वीं वर्षगांठ मनाई

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के सहयोग से भारत के पहले परमाणु परीक्षण, पोखरण-I की 50 वीं वर्षगांठ 18 मई 2024 को मनाई, जो देश की वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों में एक मील का पत्थर है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में परमाणु विज्ञान के ऐतिहासिक और समकालीन महत्व पर प्रकाश डाला गया।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने पोखरण-I परमाणु परीक्षण पर अपने विचार व्यक्त किए एवं एक व्यावहारिक अवलोकन प्रदान किया। उन्होंने देश के अभूतपूर्व वैज्ञानिक होमी जहांगीर भाभा के मूलभूत योगदान और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च की स्थापना पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री नेहरू की सरकार के तहत इस मिशन ने परमाणु प्रौद्योगिकी के शांतिपूर्ण उपयोग पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि डॉ. भाभा ने परमाणु हथियार विकसित करने की भी वकालत की थी। पड़ोसी देशों के दुश्मनीपूर्वक रवैये के साथ कठिन दौर और 1962 में चीन के साथ युद्ध के बावजूद, भारत का परमाणु कार्यक्रम जारी रहा, जिसके परिणामस्वरूप कनाडा के सहयोग और प्लूटोनियम समझौते के साथ ट्रॉम्बे में पहले परमाणु रिएक्टर का निर्माण हुआ। इसके उपरान्त श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में परमाणु हथियारों की खोज जारी रही। यह प्रयास सफल परमाणु परीक्षण, ऑपरेशन स्माइलिंग बुद्धा में परिणित हुआ, जिससे भारत स्वदेशी रूप से यह उपलब्धि हासिल करने वाला छठा देश बन गया। निदेशक महोदय ने प्रौद्योगिकीविदों और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान से अपनी ऊर्जा का उपयोग करने और ऐसी तकनीकें विकसित करने का आह्वान किया जो अगले 50 वर्षों तक देश को गौरवान्वित करे और साथ ही पोखरण की भूमि का जश्न भी मनाएँ जहां पहला परमाणु परीक्षण किया गया था।

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के प्रकाशन विभाग के उपाध्यक्ष डॉ. वी.एम. तिवारी ने भी इस दिन के महत्त्व पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने 1974 की इस उपलब्धि पर सभा उपस्थित लोगों को बधाई दी और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के साथ मिलकर प्रोफेसर अग्रवाल के विचारों का समर्थन किया। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने, वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने और आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने के लिए 1935 में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) की स्थापना पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) ने विज्ञान को सामाजिक भलाई के रूप में समर्थन देने और वैज्ञानिक प्रयासों में तालमेल को बढ़ावा देने के लिए अपने दृष्टिकोण को संरक्षित किया है। डॉ. तिवारी ने ऊर्जा स्वतंत्रता, रणनीतिक बुनियादी ढांचे, स्थाई लक्ष्यों और विशेष रूप से पृथ्वी प्रणाली विज्ञान को प्राप्त करने में विज्ञान की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने परमाणु प्रौद्योगिकियों के लिए भूविज्ञान के महत्त्व को रेखांकित किया, जिसमें परीक्षणों के लिए जगह का चयन, भूवैज्ञानिक संरचनाओं को समझना और विद्युत संयंत्रों के लिए अंतर्दृष्टि शामिल है। परमाणु परियोजनाओं के विभिन्न पहलुओं में अपनी भागीदारी पर विचार करते हुए - अन्वेषण, जगह की निगरानी, भूकंपीय गतिविधियों से लेकर यूरेनियम खनन तक - डॉ. तिवारी ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने परमाणु परीक्षण के दौरान आंकड़ों का सावधानीपूर्वक चयन, भूकंपीय तरंगों की निगरानी और विस्फोटों की रोकथाम सुनिश्चित करने के लिए भूजल प्रवाह के बारे में बताया। इस परीक्षण की सफलता के लिए पोखरण का व्यापक भूभौतिकीय सर्वेक्षण और भूजल की गति का अध्ययन महत्वपूर्ण था। डॉ. तिवारी ने परमाणु प्रौद्योगिकी में भारत को गौरवान्वित करने वाले प्रयासों की सराहना की और परीक्षण को युवा साथियों के लिए प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित करने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर को धन्यवाद देते हुए अपने भाषण का समापन किया।

इस कार्यक्रम में उपस्थित रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर के डॉ. दीपक गोपालानी, वैज्ञानिक 'जी' ने अपनी प्रस्तुति के दौरान परमाणु प्रौद्योगिकी का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने ऊर्जा, अंतरिक्ष, चिकित्सा, अनुसंधान, कृषि और रक्षा जैसे क्षेत्रों में इसके बहुमुखी अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला।

ऐतिहासिक और समकालीन परमाणु चुनौतियों पर चर्चा करते हुए डॉ. गोपालानी ने परमाणु हथियारों के विकास, अतीत के भू-राजनीतिक तनावों से लेकर वर्तमान वैश्विक चिंताओं तक, रूस, यूक्रेन, इजराइल, हमास, ईरान, चीन, ताइवान और दक्षिण चीन सागर से जुड़े संघर्षों का जिक्र किया। उन्होंने परमाणु आपात स्थितियों के लिए तैयारी और प्रतिक्रिया रणनीतियों के महत्व को रेखांकित किया, सेंसर नेटवर्किंग, विकिरण का पता लगाने, खतरे की भविष्यवाणी करने वाले सॉफ्टवेयर और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल जैसे उपायों का विवरण दिया। परमाणु क्षमताओं के रणनीतिक महत्व पर जोर देते हुए डॉ. गोपालानी ने रिएक्टर दुर्घटनाओं और आतंकवाद में परमाणु सामग्री के दुरुपयोग सहित संभावित खतरों को संबोधित किया।

डॉ. गोपालानी ने परमाणु घटनाओं के विनाशकारी परिणामों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें व्यापक रेडियोधर्मी संदूषण (Radioactive Contamination), पर्यावरणीय क्षति और परमाणु शीत (Nuclear Winter) की संभावना शामिल है। उन्होंने आतंकवादियों द्वारा डर्टी बॉम्ब (Dirty Bomb) या तात्कालिक परमाणु उपकरणों के इस्तेमाल के प्रति आगाह किया और ऐसे खतरों को कम करने के लिए निरंतर सतर्कता और व्यापक योजना की आवश्यकता पर बल दिया। अंत में, उन्होंने आबादी की सुरक्षा और परमाणु आपात स्थितियों के प्रभाव को कम करने के लिए सक्रिय उपायों का आग्रह किया।

इस ऐतिहासिक वर्षगांठ को मनाने और परमाणु विज्ञान और इसके निहितार्थों की गहरी समझ को बढ़ावा देने में उनके प्रयासों को मान्यता देते हुए, आयोजकों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।



पोखरण-I की 50 वीं वर्षगांठ कार्यक्रम के दौरान भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल, रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर से डॉ. दीपक गोपालानी, संस्थान के कुलसचिव डॉ. हरिओम यादव एवं उप-निदेशक प्रोफेसर संपत राज वडेरा।

प्रौद्योगिकी दिवस समारोह का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने प्रौद्योगिकी दिवस समारोह 08 मई 2024 को बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया। इस आयोजन का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करना था। इस आयोजन ने सभी प्रतिभागियों को एक समूह में एकजुट होने और समाज, शिक्षा एवं उद्योग पर प्रौद्योगिकी के गहरे प्रभाव पर विचार करने के लिए एक मंच प्रदान किया। स्मृति दिवस समारोह के लिए समिति (Committee for Celebration of Commemorative Days) की अध्यक्ष प्रोफेसर छंदा चक्रवर्ती ने उद्घाटन भाषण दिया और कार्यक्रम की रूपरेखा बताई।

इस अवसर पर भा.प्रौ.सं. जोधपुर के निदेशक प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने 'जल पुरुष' के नाम से मशहूर डॉ. राजेंद्र सिंह का स्वागत करते हुए उनके अमूल्य समय के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. राजेंद्र सिंह एक प्रतिष्ठित विद्वान हैं जो नदी पुनर्जीवन और पर्यावरण संरक्षण में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सुशोभित किया गया है, जिसमें उनके अनुकरणीय योगदान के लिए 2001 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार तथा भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा 1994 में इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार भी शामिल है।

प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल ने सामाजिक नवाचारों के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए भविष्य को आकार देने में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। भा.प्रौ.सं. जोधपुर में प्रौद्योगिकी और नवाचार के लिए हमारा दृष्टिकोण ज्ञान को आगे बढ़ाने और गंभीर चुनौतियों से निपटने में अंतर्निहित है। अंतःविषय सहयोग और अत्याधुनिक अनुसंधान के माध्यम से हमारा लक्ष्य प्रभावशाली नवाचार को बढ़ावा देना और सशक्त बनाना है।

अपने संबोधन में डॉ. राजेंद्र सिंह ने पर्यावरणीय स्थिरता के महत्व और हमारे प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा में तकनीकी हस्तक्षेप की अनिवार्यता पर व्यावहारिक दृष्टिकोण साझा किए। डॉ. राजेंद्र सिंह को सम्मानपूर्वक 'जल पुरुष' के नाम से जाना जाता है और वह एक प्रसिद्ध पर्यावरणविद् हैं। उन्होंने विशेष रूप से भा.प्रौ.सं. जोधपुर परिसर के लिए तैयार वर्षा जल संरक्षण और पुनर्जीवन प्रौद्योगिकियों के लिए अपने दूरदर्शी खाके का अनावरण किया। उनका दृष्टिकोण बहुआयामी है, जिसका लक्ष्य न केवल पारिस्थितिक बहाली और कायाकल्प के लिए समुदाय की भावनाओं को स्थापित करना है, बल्कि थार रेगिस्तान की स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक प्रौद्योगिकियों के साथ एकीकृत करना भी है। जिसका व्यापक उद्देश्य भा.प्रौ.सं. जोधपुर को अपने परिवेश में सकारात्मक बदलाव के रूप में स्थापित करना है। इस दृष्टिकोण को साकार करने के लिए एक व्यापक कार्यान्वयन योजना तैयार की गई है। इसमें निर्दिष्ट क्षेत्रों में जल निकायों का विकास, नीम, पीपल, बरगद, आंवला, गूलर और खेजड़ी जैसी देशी वृक्ष प्रजातियों का रोपण और आस-पास के क्षेत्रों और गांवों में वृक्षारोपण गतिविधियों में भा.प्रौ.सं. जोधपुर समुदाय की सक्रिय भागीदारी शामिल है। कार्यान्वयन को दो चरणों में विभाजित किया गया है:

चरण 1 (वर्ष 1): जागरूकता सृजन, जल निकायों पर तत्काल कार्य और स्थानीय वनस्पतियों के साथ परिसर को हरा भरा करने पर केंद्रित है।

चरण 2 (जून 2025 से): सामुदायिक भागीदारी, प्रकृति पोषण प्रौद्योगिकियों में विशेष पाठ्यक्रमों की शुरुआत और पूरे परिसर की वर्षा को संरक्षित करने के लिए वर्षा जल निकासी प्रणालियों के एकीकरण पर जोर देता है। इन ठोस प्रयासों के माध्यम से डॉ. राजेंद्र सिंह भा.प्रौ.सं. जोधपुर और इसके आसपास के लिए एक हरित, अधिक टिकाऊ भविष्य की कल्पना करते हैं।

कार्यक्रम के समापन में भा.प्रौ.सं. जोधपुर की स्मारक दिवस समारोह समिति की संयोजक सुश्री देबोश्री गांगुली ने अपनी समापन टिप्पणी में नवाचार और प्रगति को बढ़ावा देने में सहयोगात्मक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। यह परिवर्तनकारी लक्ष्यों को प्राप्त करने में सामूहिक कार्रवाई और साझेदारी के महत्व को स्वीकार करते हुए, समाज की भलाई के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने का नेतृत्व करने की भा.प्रौ.सं. जोधपुर की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।



प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल, निदेशक, भा.प्रौ.सं. जोधपुर द्वारा डॉ. राजेंद्र सिंह, 'जल पुरुष' का स्वागत



समारोह को संबोधित करते डॉ. राजेंद्र सिंह



समारोह में डॉ. राजेंद्र सिंह द्वारा व्याख्यान



डॉ. राजेंद्र सिंह को स्मृति चिह्न भेंट करते डॉ. हरिओम यादव, कुलसचिव, भा.प्रौ.सं. जोधपुर

सी.एन.आर.एस. और यूनिवर्सिटी-ल्योन, फ्रांस के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता बैठक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने फ्रांस के संस्थानों, विशेष रूप से सी.एन.आर.एस. के साथ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के संभावित अवसरों का पता लगाने के लिए 10-12 जून, 2024 की अवधि में सी.एन.आर.एस. और यूनिवर्सिटी-ल्योन, फ्रांस के शोध निदेशक डॉ. रोडोल्फ एंटोनी का स्वागत किया। अपनी यात्रा के दौरान डॉ. एंटोनी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के प्रमुख संकाय सदस्यों के साथ कई गहन चर्चाओं में शामिल हुए। डॉ. रविराज वंकलया और डॉ. दीपक अरोड़ा के साथ-साथ इंटरनेशनल कनेक्ट के सह संकाय अध्यक्ष डॉ. अंकुर गुप्ता ने इन बातचीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन चर्चाओं में दोनों संस्थानों के बीच एक सहयोगी अनुसंधान वातावरण को बढ़ावा देने के लिए आम शोध हितों, संभावित संयुक्त परियोजनाओं और रणनीतियों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस यात्रा का मुख्य आकर्षण 11 जून, 2024 को डॉ. एंटोनी द्वारा "लिंगडेड गोल्ड क्वांटम क्लस्टर: बायो एप्लीकेशन के लिए नॉनलिनियर ऑप्टिकल नैनोमटेरियल्स की एक नई श्रेणी की ओर" पर दिया गया भाषण था। इस ज्ञानवर्धक प्रस्तुति में संकाय सदस्यों और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. एंटोनी की प्रस्तुति ने लिंगडेड गोल्ड क्वांटम क्लस्टर के अभिनव गुणों और नॉनलिनियर ऑप्टिक्स के क्षेत्र में उनके आशाजनक अनुप्रयोगों पर गहन चर्चा की। उन्होंने बायोइमेजिंग, बायोसेंसिंग और अन्य बायोमेडिकल अनुप्रयोगों में नई तकनीकों के विकास के लिए इन सामग्रियों की क्षमता पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में बायो एप्लीकेशन के लिए नॉनलाइनियर ऑप्टिकल नैनोमटेरियल्स में अत्याधुनिक शोध पर केंद्रित समूह चर्चा और विचार-मंथन सत्र भी शामिल थे। डॉ. एंटोनी की यात्रा के दौरान हुई चर्चाओं और बातचीत ने संभावित सहयोगी परियोजनाओं और शोध पहलों के लिए एक मजबूत नींव रखी है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यालय ने इस कार्यक्रम और यात्राओं की सफलता में योगदान देने के लिए डॉ. एंटोनी और सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।



यूनिवर्सिटी-ल्योन, फ्रांस के शोध निदेशक डॉ. रोडोल्फ एंटोनी के संस्थान में कार्यक्रम के छायाचित्र

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के प्रो. मनोज चौधरी 'मारवाड़ रत्न' से सम्मानित

गति शक्ति विश्वविद्यालय वडोदरा के कुलपति और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर (लियन पर) के प्रोफेसर मनोज चौधरी को जोधपुर के 566वें स्थापना दिवस पर प्रतिष्ठित 'मारवाड़ रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार विशेष रूप से महाराजा हनवंत सिंह पुरस्कार के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है।

प्रोफेसर चौधरी ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से संचार प्रणालियों में पी.एच.डी. और एम.बी.एम. इंजीनियरिंग महाविद्यालय, जोधपुर से इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स और टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स में महत्वपूर्ण भूमिकाओं सहित शिक्षा और उद्योग में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया के शोध केन्द्र में उनके नेतृत्व ने SoC डिजाइन में उल्लेखनीय प्रगति की, जिससे दुनिया का पहला 5-जी चिप और मोबाइल फोन के लिए 108 मेगापिक्सेल कैमरा संभव हुआ। प्रोफेसर चौधरी ने वायरलेस मानकों और बौद्धिक संपदा, कई IEEE/ECMA मानकों के लेखक और कई पेटेंट के माध्यम से इस क्षेत्र में वैश्विक स्तर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। वह वर्तमान में 6-जी टास्क फोर्स के सदस्य हैं और सेमीकंडक्टर प्रयोगशाला, एससीएल प्रबंधन परिषद में कार्यरत हैं।



प्रोफेसर मनोज चौधरी को मारवाड़ रत्न पुरस्कार प्रदान करते हुए जोधपुर के पूर्व शासक श्री गजसिंह

अन्याय होने पर चुप रहना, अन्याय करने के समान ही है। -मुंशी प्रेमचंद

दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका नहीं, उसकी दौलत का सम्मान है। -मुंशी प्रेमचंद

गरिमा सम्मान पाने में नहीं, बल्कि इस चेतना में है कि हम उनके लायक हैं। -अरस्तु

अवसर के रहने की जगह कठिनाइयों के बीच है। - अलबर्ट आइन्स्टाइन

बेले II अंतर्राष्ट्रीय मास्टरक्लास कार्यक्रम 2024 का उद्घाटन सत्र

भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने बेले II इंटरनेशनल मास्टरक्लास कार्यक्रम की मेजबानी की जो उनका भारत में पहला कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सबसे प्रतिभाशाली युवा मस्तिष्क में "हमारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति और संरचना" की खोज के लिए जुनून जगाना रहा। इंटरनेशनल मास्टरक्लास कार्यक्रम एक वैश्विक पहल है जिसे स्विट्जरलैंड में सी.ई.आर.एन. (CERN) और जापान में के.ई.के. (KEK) जैसी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मेगा-साइंस परियोजनाओं द्वारा किए गए जटिल प्रयोगों और शोध कार्यों को प्रस्तुत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। हर साल 60 से ज्यादा देश और 225 से ज्यादा विश्वविद्यालय इसमें भाग लेते हैं और इस वर्ष भा.प्रौ.सं. जोधपुर बेले II के साथ इस प्रतिष्ठित समूह में शामिल हो गया है।

केन्द्रीय विद्यालय संख्या- 02 (सेना) जोधपुर के 28 छात्रों और 3 शिक्षकों के दल ने इस एक दिवसीय कार्यक्रम में भाग लिया, जिसमें भा.प्रौ.सं. संकाय सदस्यों द्वारा दिए गए गहन व्याख्यानों, बेले II प्रयोग के वृहद डेटा विश्लेषण में व्यावहारिक प्रशिक्षण और के.ई.के. जापान के प्रोफेसर शोहेई निशिदा के साथ विशेष वीडियो कॉन्फ्रेंस बातचीत के माध्यम से बिग बैंग के रहस्यों को उजागर किया गया। भा.प्रौ.सं. जोधपुर के भौतिकी विभाग के उच्च-ऊर्जा भौतिकी समूह ने 1 मई को इस कार्यक्रम का आयोजन किया।



बेले II अंतर्राष्ट्रीय मास्टरक्लास कार्यक्रम 2024 के छायाचित्र

भौतिकी विभाग के प्रमुख प्रो. आशुतोष कुमार आलोक और डॉ. जितेंद्र कुमार ने भावी पीढ़ी के लिए ऐसे आयोजनों के महत्त्व पर जोर देते हुए कहा, "यह महज एक आयोजन नहीं है - यह ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने की दिशा में एक यात्रा है। हम भविष्य में और अधिक छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए हर साल ऐसे आयोजन करने का प्रयास करेंगे।"

भा.प्रौ.सं. जोधपुर, जापान के के.ई.के. अंतर्राष्ट्रीय मेगा-विज्ञान परियोजना बेले II से जुड़ा हुआ है। बेले II परियोजना का लक्ष्य हमारे ब्रह्मांड के रहस्यों का पता लगाना और उनका उत्तर खोजना है। सी.पी. उल्लंघन (CP violation) पर बेले प्रयोग के परिणामों ने 2008 के भौतिकी में नोबेल पुरस्कार के लिए आधार तैयार किया था। बेले II सहयोग और इंटरनेशनल पार्टिकल फिजिक्स आउटरीच ग्रुप (IPPOG - International Particle Physics Outreach Group) द्वारा समर्थित इस कार्यक्रम का उद्देश्य कण भौतिकी अनुसंधान और उसके महत्त्व को पेश करना, हमारे ब्रह्मांड की अनसुलझी समस्याओं और उनके महत्त्व को समझाना और अंतर्राष्ट्रीय मेगा-विज्ञान परियोजनाओं और उनकी भविष्य की शोध योजनाओं पर प्रकाश डालना है।

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्रों को कण भौतिकी अनुसंधान (Particle Physics Research) और इसकी वैश्विक प्रासंगिकता, अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान सुविधाओं और अग्रिम पथ के अवसरों की जानकारी, वृहद डेटा विश्लेषण और मौलिक कण खोजों का व्यावहारिक अनुभव, तथा के.ई.के. जापान के शीर्ष वैज्ञानिकों के साथ सीधा संपर्क प्राप्त हुआ, जिससे उन्हें कण भौतिकी में भविष्य के पथ के लिए प्रेरणा मिली।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभाशाली युवाओं में "हमारे ब्रह्मांड की उत्पत्ति और संरचना" का पता लगाने के लिए जिज्ञासा को प्रेरित करना है। प्रतिभागियों को सी.ई.आर.एन. और के.ई.के. जैसी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मेगा-विज्ञान परियोजनाओं द्वारा किए गए जटिल प्रयोगों से परिचित कराकर, कार्यक्रम कण भौतिकी के क्षेत्र और इसकी भविष्य की दिशाओं का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है।

ई-सरल हिंदी वाक्य कोश

[beacon] The scheme continues to be a beacon of financial inclusion.	[प्रकाशस्तम्भ] यह योजना वित्तीय समावेशन का प्रकाशस्तम्भ बनी हुई है।
[unprecedented opportunities] Khelo India is giving unprecedented opportunities to the youth from ordinary families.	[अभूतपूर्व अवसर] खेलो इंडिया सामान्य परिवारों के युवाओं को अभूतपूर्व अवसर दे रहा है।
[explicit] It can be made more explicit by providing ways to dispose of the representation.	[स्पष्ट] अभ्यावेदन के निपटान के तरीके प्रदान करके इसे और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।
[Pre-grant representation] The procedure to file and dispose the Pre-grant representation by way of opposition has been further streamlined.	[अनुदान-पूर्व अभ्यावेदन] विरोध के माध्यम से अनुदान-पूर्व अभ्यावेदन दाखिल करने और निपटाने की प्रक्रिया को और अधिक सुव्यवस्थित किया गया है।

तकनीकी शोध सुदूर सौर पैनल इंस्टॉलेशन के लिए अत्याधुनिक ईवी चार्जिंग एडाप्टर

भा.प्रौ.सं. जोधपुर के शोधकर्ताओं ने इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) चार्जिंग तकनीक में एक अभूतपूर्व प्रगति की घोषणा की है, जिसका नेतृत्व विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के डॉ. निशांत कुमार कर रहे हैं। यह नया विकसित एडाप्टर दूरदराज के क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता की पूर्ति करता है, जो टिकाऊ और कुशल ऊर्जा वितरण के लिए पृथक पिलर-टॉप सौर पैनलों का उपयोग करता है।

दूरस्थ स्थानों के लिए अभिनव चार्जिंग समाधान

अपने सीमित ऊर्जा भंडारण के साथ ईवी बैटरियों को विश्वसनीय पुनर्भरण समाधान की आवश्यकता होती है। जबकि शहरी केंद्र पर्याप्त चार्जिंग सुविधाओं से लैस हैं, दूरस्थ और कम आबादी वाले क्षेत्रों को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बड़े देश जैसे कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया, रूस और कई अरब राज्य आपातकालीन ईवी चार्जिंग प्रदान करने के लिए अलग-अलग स्थानों में पिलर-टॉप सोलर पैनल प्रतिष्ठानों पर विचार कर रहे हैं। डॉ. कुमार का शोध एक विशेष सेंसर-आधारित एवं कम लागत वाला चार्जिंग एडाप्टर है जिसे अधिकतम दक्षता और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस चार्जिंग एडाप्टर से छेड़छाड़ किए बिना कंपनी द्वारा प्रदान किए गए चार्जिंग एडाप्टर से आसानी से जोड़ा जा सकता है, इसलिए उत्पाद की विनिर्माण वारंटी का उल्लंघन नहीं होता है।

मुख्य विशेषताएं और लाभ

प्रस्तावित चार्जिंग एडाप्टर एक परिष्कृत एल्गोरिदम का उपयोग करता है जिसे सिंगल इनपुट एडेप्टिव फ़ज़्ज़ी लॉजिक ट्यून्ड डिटरमिनिस्टिक ऑप्टिमाइज़ेशन (SIAFL-DO - Single Input Adaptive Fuzzy Logic tuned Deterministic Optimization) के रूप में जाना जाता है। इस तकनीक से अधिकतम पावर पॉइंट ट्रैकिंग (MPPT- Maximum Power Point Tracking) और सटीक बैटरी चार्ज प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सकता है। यह अभिनव प्रणाली एक एकल करंट सेंसर का उपयोग करती है, जो इसे लागत-प्रभावी और अत्यधिक प्रतिक्रियाशील बनाती है। इसके मुख्य लाभ में शामिल हैं:

कुशल ऊर्जा प्रबंधन: SIAFL-DO एल्गोरिदम MPPT को सटीकता से निष्पादित करता है, चार्जिंग प्रक्रिया का सुरक्षित प्रबंधन करते हुए सौर पैनलों से अधिकतम ऊर्जा ग्रहण करता है।

औद्योगिक अनुकूलता: एडाप्टर कड़े यूरोपीय मानक EN50530 को पूरा करता है, जो औद्योगिक अनुप्रयोग के लिए इसकी उपयुक्तता को प्रदर्शित करता है।

सुरक्षा और विश्वसनीयता: एकीकृत बैटरी प्रबंधन सुविधाएं प्रतिकूल परिस्थितियों से सुरक्षा प्रदान करती हैं, तथा दूरस्थ स्थानों पर सुरक्षित चार्जिंग सुनिश्चित करती हैं।

लागत-प्रभावशीलता: एकल सेंसर के उपयोग से लागत कम हो जाती है और विद्युत चुम्बकीय हस्तक्षेप (Electromagnetic Interference) की संवेदनशीलता न्यूनतम हो जाती है, जिससे प्रणाली अधिक विश्वसनीय और सस्ती हो जाती है।

प्रमाणित प्रदर्शन

इस शोध में एडेप्टर की अनुकूलता और प्रदर्शन का आकलन करने के लिए हार्डवेयर प्रोटोटाइप का उपयोग करके व्यापक परीक्षण शामिल था। अत्याधुनिक तरीकों के साथ तुलनात्मक अध्ययनों ने पुष्टि की है कि SIAFL-DO दृष्टिकोण मौजूदा एल्गोरिदम से बेहतर प्रदर्शन करता है, खासकर स्थिरता और गतिशील प्रतिक्रिया के मामले में।

व्यापक प्रभाव

यह प्रगति उन क्षेत्रों में ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण है जहां पारंपरिक चार्जिंग स्टेशन अव्यावहारिक या कम लाभकारी हैं। अभिनव चार्जिंग एडेप्टर के माध्यम से सौर ऊर्जा का उपयोग करके, दूरदराज के क्षेत्र में अब टिकाऊ और कुशल ईवी चार्जिंग समाधानों से लाभ उठाया जा सकता है।



चार्जिंग एडाप्टर का मॉडल प्रारूप

ई-सरल हिंदी वाक्य कोश

[world-class] DST has taken up the challenge to build a world-class R and D capability in quantum technologies.	[विश्व स्तरीय] डीएसटी ने क्वांटम प्रौद्योगिकियों में विश्व स्तरीय अनुसंधान एवं विकास की क्षमता तैयार करने की चुनौती स्वीकार की है।
[robust] efforts are being made to create a robust and vast system of higher and technical education	[मजबूत] उच्च और तकनीकी शिक्षा की एक मजबूत और व्यापक प्रणाली बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं।
[All-round development] All-round development of citizens can be achieved by building strong foundations in education.	[सर्वांगीण विकास] शिक्षा की मजबूत नींव बनाकर नागरिकों का सर्वांगीण विकास हो सकता है।
[list] Before uploading the documents, list them so that it becomes easy to identify them.	[सूचीबद्ध करना] दस्तावेज़ अपलोड करने से पहले उन्हें सूचीबद्ध कर लें ताकि उनकी पहचान करना आसान हो जाए।
[service campaign] These beneficial schemes are an extension of the service campaign that our government has been running.	[सेवा अभियान] ये लाभकारी योजनाएं हमारी सरकार द्वारा चलाये जा रहे सेवा अभियान का ही विस्तार हैं।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर संगोष्ठी

सतत विकास के लिए उभरती हुई प्रौद्योगिकी केंद्र (सीईटीएसडी) और उन्नत भारत अभियान (यूबीए), भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण क्षेत्र पर केंद्रित एक नए संवाद की शुरुआत करते हुए अपनी सेमिनार श्रृंखला को फिर से शुरू किया है। जैसा कि हम इस नई यात्रा पर आगे बढ़ रहे हैं, हमारा लक्ष्य दृढ़ है: सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की खोज में अंतःविषय चर्चा और कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि को उत्प्रेरित करना।

स्वास्थ्य विषय पर आयोजित इस नई सेमिनार श्रृंखला के लिए चुनी गई विषयवस्तु विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के विश्व स्वास्थ्य दिवस 2024 के निर्देश के साथ सहज रूप से संरेखित है - "मेरा स्वास्थ्य, मेरा अधिकार।" क्षेत्र की प्रतिष्ठित चिकित्सा अधिकारी डॉ. पंकजा राघव ने "समुदायों के सतत विकास के लिए स्वास्थ्य अधिकारों को प्राप्त करना" शीर्षक पर मुख्य भाषण दिया। एम्स जोधपुर में परिवार और सामुदायिक चिकित्सा विभाग की प्रोफेसर और प्रमुख के रूप में व्यापक विशेषज्ञता अर्जित डॉ. राघव ने सतत सामुदायिक विकास के संदर्भ में एक मौलिक मानव अधिकार के रूप में स्वास्थ्य की सुरक्षा की अनिवार्यता को स्पष्ट किया। सेमिनार के दौरान संभावित प्रश्नों पर विचार किया गया :

- ◆ सामाजिक-आर्थिक स्थिति या भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना हम स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं ?
- ◆ समुदायों के भीतर स्वास्थ्य अधिकारों और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए कौन सी सरकारी नीतियाँ और अंतर्राष्ट्रीय ढाँचे आवश्यक हैं ?
- ◆ स्वास्थ्य सेवा प्रणालियाँ किस तरह से निवारक उपायों और समुदाय-आधारित हस्तक्षेपों को प्राथमिकता दे सकती हैं ताकि दीर्घकालिक जनसंख्या स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित किया जा सके ?



विश्व स्वास्थ्य दिवस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. पंकजा राघव एवं प्रतिभागी

किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या ना आए-आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।

- स्वामी विवेकानंद

विश्व पर्यावरण दिवस पर वर्चुअल पैनल चर्चा

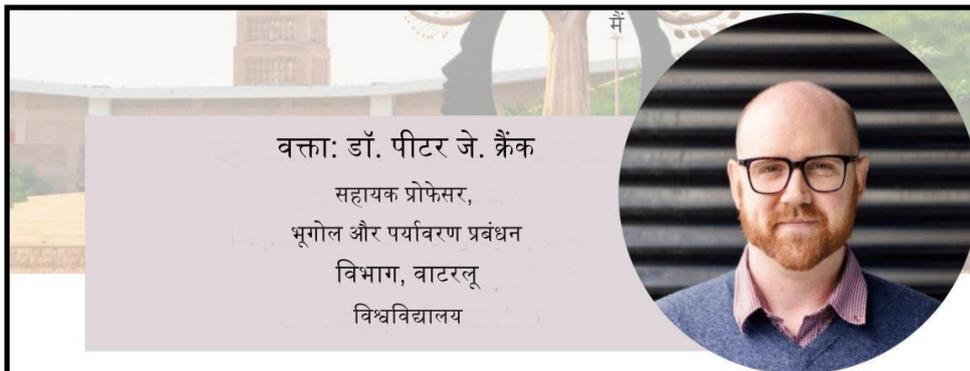
सतत विकास के लिए उभरती हुई प्रौद्योगिकी केंद्र (सी.ई.टी.एस.डी.) ने विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के उपलक्ष्य में "भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता" विषय पर एक वर्चुअल पैनल चर्चा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की मेजबानी डॉ. राज्यलक्ष्मी और डॉ. श्रेया ने की। चर्चा का विषय "ग्रह पृथ्वी के लिए आगे का रास्ता: हरियाली से लेकर सतत भविष्य तक", जिसमें भारत, अमेरिका और नीदरलैंड के विशेषज्ञों ने भूमि बहाली और सतत भविष्य पर अपने विचार साझा किए। पैनल चर्चा 6 जून, 2024 को आयोजित की गई थी। भाग लेने वाले विशेषज्ञों ने भूमि बहाली और सतत भविष्य के महत्व पर जोर दिया एवं विभिन्न देशों में लागू की जा रही नवीनतम तकनीकों और रणनीतियों पर चर्चा की।



सतत विकास के लिए उभरती हुई प्रौद्योगिकी केंद्र (CETSD) भा. प्रौ. सं. जोधपुर का केंद्र है जो प्रौद्योगिकी, वित्त पोषण, प्रबंधन, सामाजिक, डेटा और पर्यावरण संबंधी टचस्टोन को मिलाकर योजनाओं के माध्यम से व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। समुदाय, उद्योग, सरकार, छात्र, शैक्षणिक संस्थान, व्यक्ति और गैर-सरकारी संगठन इस अंतर-अनुशासनात्मक केंद्र का हिस्सा हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस पर संगोष्ठी

विश्व पृथ्वी दिवस पर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के 'सतत विकास के लिए उभरती हुई प्रौद्योगिकी केंद्र' द्वारा स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य के बीच महत्वपूर्ण संबंध पर केंद्रित एक संगोष्ठी आयोजन किया गया। वाटरलू विश्वविद्यालय में भूगोल और पर्यावरण प्रबंधन के सहायक प्रोफेसर डॉ. पीटर जे. क्रैंक ने 22 अप्रैल को "स्वास्थ्य, जलवायु और मानव स्वास्थ्य" शीर्षक पर एक व्याख्यान दिया गया। यह कार्यक्रम आभासी रूप में आयोजित किया गया।



विश्व साइकिल दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के खेल अनुभाग द्वारा विश्व साइकिल दिवस 2024 के उपलक्ष्य में 3 जून को एक साइकिल रैली का आयोजन किया गया, जिसकी विषयवस्तु थी "साइक्लिंग के माध्यम से स्वास्थ्य, समानता और स्थिरता को बढ़ावा देना"। पर्यावरण के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने और लोगों के बीच स्वास्थ्य संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए 5 KM साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में संकाय सदस्य, स्टाफ सदस्य एवं छात्रों ने भाग लिया।



विश्व साइकिल दिवस कार्यक्रम के छायाचित्र

कैनसैट इंडिया में नेक्ससैट का शानदार प्रदर्शन

IN-SPACE मॉडल रॉकेटी इंडिया स्टूडेंट कॉम्पिटिशन 2024-25 का आयोजन एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा ISRO के सहयोग से किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य भारत में इंजीनियरिंग/विज्ञान स्ट्रीम से जुड़े अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट टीमों को एक शौकिया रॉकेट को डिजाइन करने और लॉन्च करने का यथार्थवादी अनुभव प्रदान करना है, जो मिशन और प्रदर्शन आवश्यकताओं के एक निर्दिष्ट सेट को पूरा करता हो।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने कैनसैट इंडिया प्रतियोगिता के फाइनल में संस्थान की टीम नेक्ससैट ने शानदार प्रदर्शन किया है। 27 शीर्ष टीमों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, नेक्ससैट ने एक त्रुटिहीन प्रक्षेपण और डेटा पुनर्प्राप्ति के साथ नियंत्रित अवरोहण में विशेषज्ञता का प्रदर्शन किया। कैनसैट इंडिया 2022-23, अपनी तरह का पहला कार्यक्रम है जिसमें स्टूडेंट टीमों को कार्यात्मक उपग्रह कनस्तर बनाने की चुनौती दी गई। करीब 18 महीनों की डिजाइन समीक्षा और कठोर परीक्षण के माध्यम से नेक्ससैट ने इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर नेक्ससैट की इस उपलब्धि पर गर्व की अनुभूति महसूस करता है, तथा यह एयरोस्पेस नवाचार को बढ़ावा देने के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस प्रतियोगिता में आयोजकों द्वारा प्रदान किए गए 1 किलोग्राम द्रव्यमान के CAN-आकार के उपग्रह को ले जाने वाले मॉडल रॉकेट का डिजाइन, विकास और लॉन्च शामिल है, जिसे लॉन्च साइट से 1000 मीटर की ऊंचाई पर ले जाना, साथ ही CANSAT को सुरक्षित रूप से बाहर निकालना और रॉकेट की सुरक्षित लैंडिंग भी शामिल है। प्रतिभागियों से रॉकेटरी की मूल बातें सीखने की अपेक्षा की जाती है, साथ ही टीम निर्माण, सहयोग, परियोजना प्रबंधन और पारस्परिक संचार जैसे सॉफ्ट स्किल्स भी सीखे जाते हैं। कई महीनों की अवधि में, प्रतिभागियों को प्रक्षेपण वाहन बनाने के लिए इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं का अनुभव मिलता है और देश भर के साथियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्राप्त होता है, जिसमें आयोजकों द्वारा अंतिम रूप से चुने गए स्थान पर मार्च-जून 2025 के बीच होने वाले राष्ट्रीय स्तर के फाइनल में भाग लेने का अवसर मिलेगा।



कैनसैट इंडिया प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के छायाचित्र

अंबेडकर जयन्ती कार्यक्रम

16 अप्रैल, 2024 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में अंबेडकर जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान की स्मारक दिवस समारोह समिति द्वारा किया गया। इस दिन एक निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था: “विविधता और समावेशिता पर बी.आर. अम्बेडकर”। इस प्रतियोगिता में संस्थान से संकाय सदस्यों, कार्मिकों तथा छात्रों द्वारा भाग लिया गया। इस निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को कार्यक्रम के उपरांत पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ निदेशक महोदय के उद्घाटन भाषण के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्य द्वारा "डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिकोण के माध्यम से सशक्तिकरण" पर व्याख्यान दिया गया। एक भारत श्रेष्ठ भारत क्लब, के सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ किया गया। यह उत्सव डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की विरासत और सशक्तिकरण, विविधता और समावेशन में उनके योगदान को प्रतिबिंबित करने का एक अमूल्य अवसर प्रदान करने वाला था।



अंबेडकर जयन्ती 2024 समारोह के छायाचित्र

विश्व योग दिवस

21 जून 2024 को विश्व योग दिवस के अवसर पर स्मारक दिवस समारोह समिति द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में 19-21 जून 2024 के दौरान तीन दिनों का अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस योग दिवस समारोह में संस्थान के सभी कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस समारोह में आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर के योग विशेषज्ञों के द्वारा आयुष मंत्रालय के नियमानुसार योग करवाया गया। यह कार्यक्रम पूरे संस्थान समुदाय को एक साथ आने और सद्भाव और एकता की भावना को बढ़ावा देने के दौरान योग के कई लाभों का अनुभव करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करने वाला रहा।



विश्व योग दिवस 21 जून 2024 को संस्थान में मनाये गए समारोह के दौरान प्रतिभागियों के छायाचित्र

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रत्येक वर्ष 21 जून को मनाया जाता है, जिसे उत्तरी गोलार्ध में वर्ष के सबसे लंबे दिन के रूप में इसके महत्व के लिए चुना गया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 का विषय "महिला सशक्तिकरण के लिए योग" है, जो महिलाओं की भलाई को बढ़ाने में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है।

“योग” शब्द संस्कृत मूल युज् से निकला है, जिसका अर्थ है “जुड़ना”, “जोड़ना” या “एकजुट होना।” यह लोगों और प्रकृति के बीच सामंजस्य, मन और शरीर का मिलन, संयम और पूर्ति, विचार और क्रिया, तथा स्वास्थ्य और कल्याण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा को अपने संबोधन के दौरान अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का सुझाव दिया। मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि योग “भारत का उपहार” है और यह दुनिया भर के लोगों के स्वास्थ्य और खुशी को बढ़ा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों ने 11 दिसंबर 2014 को 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने पर सहमति व्यक्त की।

भारतवाणी : भारतीय भाषाओं द्वारा ज्ञान

भारतवाणी एक परियोजना है जिसका उद्देश्य एक पोर्टल (वेबसाइट) के माध्यम से मल्टीमीडिया (पाठ, ऑडियो, वीडियो, चित्र) प्रारूपों का उपयोग करके भारत की सभी भाषाओं में और उनके बारे में ज्ञान प्रदान करना है। यह पोर्टल सभी को शामिल करने वाला, संवादात्मक, गतिशील और नियंत्रित है। इसका उद्देश्य डिजिटल इंडिया के युग में भारत को एक खुला ज्ञान समाज बनाना है।

भारत में ज्ञान के निर्माण और उसको प्रसार करने की पुरानी परंपरा है जो मानव जाति के कल्याण के लिए है। विगत अनेक शताब्दियों के दौरान बाहरी सभ्यताओं के आगमन ने इस प्राचीन परंपरा के प्रति हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। ‘डिजिटल भारत’ के इस युग में अपने इस ज्ञान और अपनी भाषाओं को संरक्षित करने की महती आवश्यकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारतवाणी परियोजना की शुरुआत की गई है जो ज्ञान के क्षेत्र में एक अनूठी पहल है। इस परियोजना का लक्ष्य एक ऑनलाइन पोर्टल के जरिए लगभग सभी भारतीय भाषाओं में और उनके बारे में मल्टीमीडिया प्रारूप (पाठ, श्रव्य, दृश्य, चित्रांकित रूप) में ज्ञान का ऐसा भंडार बनाना है जिसमें से मनचाही सूचना ढूँढकर निकाली जा सके।

यह भारतवाणी पोर्टल समाज के हर तबके की पहुँच के भीतर होगा। इसका क्रियान्वयन भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु, कर्नाटक के द्वारा किया जा रहा है। इस पोर्टल पर कॉपीराइट (संसोधित) कानून, 2012 की ‘उचित प्रयोग’ से संबंधित धाराओं के अंतर्गत शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए मुक्त ज्ञान सामग्री उपलब्ध करायी जा रही है।

एक सबल, अंतःक्रियात्मक और उपयोग में आसान वेब उपकरण के जरिए देश भर के विभिन्न सरकारी/निजी संस्थानों द्वारा तैयार ज्ञान सामग्री को इकट्ठा करके उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए उपलब्ध कराना भारतवाणी परियोजना का प्रमुख कार्यक्षेत्र है। इस परियोजना का मार्गदर्शन एक राष्ट्रीय सलाहकार समिति और एक तकनीकी सलाहकार समिति करेगी और इनके अतिरिक्त प्रत्येक भाषा के लिए अलग-अलग संपादकीय समितियाँ भी होंगी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं और व्यक्तियों से इस महत्वाकांक्षी परियोजना में सक्रिय सहभागिता की अपील करता है जो ज्ञान के आदान-प्रदान के एक बड़े सामाजिक आंदोलन में परिणत हो पाएगा।

कानून और प्रौद्योगिकी में उभरती चुनौतियों पर कार्यशाला

राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने 8 अप्रैल, 2024 को एक व्यावहारिक विषयों पर कार्यशाला आयोजित यह कार्यशाला कानून और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उभरती चुनौतियों को संबोधित करने पर केंद्रित थी। कार्यशाला का उद्देश्य अंतःविषय चर्चाओं को बढ़ावा देना और समसामयिक मुद्दों के नवीन समाधान तलाशना रहा।

कार्यशाला की शुरुआत राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर में सहायक प्रोफेसर सुश्री कृतिका सिंह के गर्मजोशी भरे स्वागत भाषण के साथ हुई। इसके बाद उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर की माननीय कुलपति प्रोफेसर हरप्रीत कौर और श्री अरुण राय सहित सम्मानित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिन्होंने औपचारिक रूप से दीप प्रज्ज्वलित किया, जो प्रकाश, ज्ञान और सहभागिता का प्रतीक है।

अपने संबोधन में, प्रोफेसर हरप्रीत कौर ने प्रौद्योगिकी में तेजी से प्रगति से उत्पन्न होने वाली सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और अविश्वास (antitrust) संबंधी मुद्दों जैसी चुनौतियों के समाधान के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने छात्रों को आवश्यक कौशल और विशेषज्ञता से लैस करने के लिए राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर और भा.प्रौ.सं. जोधपुर के बीच सहयोगात्मक पहल की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें कानून और प्रौद्योगिकी से जुड़े विषयों पर बेहतर शोध के लिए एक संयुक्त केंद्र की स्थापना का प्रस्ताव रखा गया।

कार्यशाला में प्रख्यात वक्ताओं द्वारा अतुलनीय व्याख्यान दिए गए। जिसमें मुख्यतः मानव संसाधन, ई-समिति, उच्चतम न्यायालय / एससी की सदस्य सुश्री आर अरुलमोझिसेल्वी का प्रतिबोधन शामिल था जिन्होंने न्याय तक पहुँच बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी को अपनाने पर जोर देते हुए भारतीय कानून प्रणाली के डिजिटल परिवर्तन पर प्रकाश डाला। भा.प्रौ.सं. पटना के पूर्व निदेशक प्रोफेसर पुष्पक भट्टाचार्य ने लीगल लामा प्रोजेक्ट (Legal Llama Project) जैसी पहल का हवाला देते हुए न्याय प्रदान करने में तेजी लाने में भाषा प्रौद्योगिकी की भूमिका पर चर्चा की। पैनल वार्ताओं में विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई, जिसमें नए जमाने की प्रौद्योगिकियों के लिए कानूनी मुद्दे, कानूनी विश्लेषण का उपयोग और फिनटेक और क्रिप्टोकॉर्सेसी को विनियमित करना शामिल था। वार्ताओं का संचालन भा.प्रौ.सं. जोधपुर के डॉ. इंद्रनील बनर्जी और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर की सुश्री प्रीति बडोला ने किया।

डॉ. गुलशन राय, राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वयक ने समकालीन कानूनी चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए कानूनी शिक्षा में प्रौद्योगिकी और नवाचार को एकीकृत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यशाला में भारत में एआई (AI) और आईपी (IP) नीतियों पर सत्र भी शामिल थे, जिसमें उभरती प्रौद्योगिकियों को विनियमित करने की जटिलताओं पर चर्चा की गई।

प्रोफेसर चंदा चक्रवर्ती, स्कूल प्रमुख, प्रबंधन अध्ययन, भा.प्रौ.सं.जोधपुर और राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर से डॉ. नीति माथुर ने कार्यशाला को शानदार बनाने में अमूल्य योगदान के लिए सभी प्रतिभागियों, वक्ताओं और प्रायोजकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। आगामी वर्षों में यह कार्यशाला कानून और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग और पहल का मार्ग प्रशस्त करेगी।

केवल एक अच्छाई है, ज्ञान, और एक बुराई है, अज्ञान। - सुकरात

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के आईहब दृष्टि (iHub Drishti) फाउंडेशन और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की साझेदारी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर (भा.प्रौ.सं. जोधपुर) में आईहब दृष्टि फाउंडेशन ने 16 अप्रैल 2024 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के साथ भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर प्रोफेसर रमेश सी गौड़, विभागाध्यक्ष, कलानिधि, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, संस्थान में उपस्थित थे। आईहब दृष्टि फाउंडेशन, कंप्यूटर विज्ञान, संवर्धित वास्तविकता (Augmented Reality) और आभासी वास्तविकता (Virtual Reality) पर केंद्रित एक प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र है जो साइबर फिजिकल सिस्टम (Cyber Physical System) प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एक प्रमुख शैक्षणिक अनुसंधान संस्थान है जो कि भारतीय कला और संस्कृति में अनुसंधान, दस्तावेजीकरण और ज्ञान के प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है।

आईहब दृष्टि फाउंडेशन और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के बीच सहयोग का उद्देश्य पांडुलिपियों, पुस्तकों और ऐतिहासिक दस्तावेजों को डिजिटल प्रारूप में बनाना है जिससे डिजिटल युग में उनका संरक्षण, पहुँच और उपयोग सुनिश्चित हो सके। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के पास विभिन्न भारतीय भाषाओं में फैली पुस्तकों, पांडुलिपियों और माइक्रोफिल्म में संग्रहित ऐतिहासिक दस्तावेजों सहित मूल्यवान संसाधनों का एक महत्वपूर्ण संग्रह है। इसमें पहला उद्देश्य इन माइक्रोफिल्मों को डिजिटल बनाना और उन्हें ऑनलाइन खोजने योग्य सुलभ बनाना है। समझौता ज्ञापन दोनों संस्थानों के बीच सहयोग के दायरे को रेखांकित करता है जिसमें डिजिटलीकरण और सांस्कृतिक कलाकृतियों के संरक्षण में सहयोगात्मक अनुसंधान और विकास शामिल है। यह सहयोग दो चरणों में किया जाएगा जिसमें:

- **पहला चरण** सहयोगात्मक अनुसंधान और विकास पर केंद्रित होगा,
- **दूसरे चरण** में प्रथम चरण के अंत तक प्रगति का मूल्यांकन और भविष्य की गतिविधियों की योजना बनाने के लिए एक मूल्यांकन तंत्र शामिल होगा।

मनन-मंथन

- हम वर्तमान में जीते हैं, भविष्य के सपने देखते हैं और भूतकाल से सीखते हैं। - अज्ञात
- जिंदगी में आने वाली समस्याएँ जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए होती हैं। - अज्ञात
- अवसर, प्रकृति, मजबूरी, आदत, कारण, जूनून और इच्छा: इन सात वजहों से ही हम सभी काम करते हैं - अरस्तु
- व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है। - महात्मा गांधी

डीआरडीओ-उद्योग-शैक्षणिक उत्कृष्टता केंद्र (DIA- CoE) का उद्घाटन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के सहयोग से डीआरडीओ-उद्योग-शैक्षणिक उत्कृष्टता केंद्र (DIA- CoE) का उद्घाटन किया। यह केंद्र शिक्षा जगत, उद्योग और डीआरडीओ अनुसंधान प्रयोगशालाओं के बीच सहयोग के माध्यम से अंतःविषय अनुसंधान में क्रांति लाने और रक्षा प्रौद्योगिकी में नवप्रवर्तकों की अगली पीढ़ी को बढ़ावा देने का कार्य करेगा। उद्घाटन समारोह में रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. समीर वी. कामत के साथ डॉ. सुब्रत रक्षित, महानिदेशक (टीएम) डीआरडीओ मुख्यालय की गरिमामय उपस्थिति रही।

यह उत्कृष्टता केंद्र डेजर्ट वारफेयर टेक्नोलॉजीज, फ्यूचरिस्टिक ओमनी मोबिलिटी सिस्टम और सूचना और वॉरगेमिंग टेक्नोलॉजीज के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहित चिन्हित किए गए अन्य विषयों में निर्देशित अनुसंधान का नेतृत्व करेगा। इसके अलावा, यह डीआरडीओ द्वारा चिन्हित की गई विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर पहल करेगा, जिससे नवाचार और सहयोग के एक नए युग की शुरुआत होगी।

अपने संबोधन में, डॉ. समीर वी. कामत ने सहयोगी उद्यम के बारे में आशावादिता व्यक्त करते हुए कहा, "यह दिन DIA- CoE की यात्रा में एक बहुत ही महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। हमारा लक्ष्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं, शिक्षा जगत और उद्योग को शामिल करते हुए एक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के साधन के रूप में डीआईए- सीओई का उपयोग करना है। हमारी इच्छा है कि आने वाले वर्षों में ये उत्कृष्टता केंद्र संयुक्त राज्य अमेरिका के केंद्रों की तरह होंगे जहां एमआईटी (MIT), कैलटेक (Caltech), स्टैनफोर्ड ने अमेरिका को प्रौद्योगिकी में महाशक्ति बनाने में बड़ी भूमिका निभाई थी। हमें उम्मीद है कि यह केंद्र हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के स्वप्न को पूरा करते हुए, प्रौद्योगिकी में अग्रणी राष्ट्र बनाने के लिए हमें प्रेरणा प्रदान करेंगे।"

सहयोग के पहले चरण के तहत, भा.प्रौ.सं. जोधपुर और डीआरडीओ विभिन्न प्रकार के नवाचारों को शुरू करेंगे, जिसमें मल्टी-एजेंट एम्फीबियस क्वाडकोप्टर सिस्टम, बायोइंस्पायर्ड फ्लैपिंग विंग मॉडल, एआईओटी (AIoT) आधारित जल निगरानी तकनीक (Water Monitoring Technologies), डेजर्ट वारफेयर के लिए स्मार्ट परिधान (Smart Apparel) इत्यादि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, आने वाले समय में भविष्य की परियोजनाएं जिसमें कोल्ड प्लाज्मा-आधारित प्रौद्योगिकियों, हाइड्रोजन-आधारित बिजली उत्पादन प्रणालियों और रक्षा अनुप्रयोगों के लिए ऊर्जा संचयन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

श्री रवींद्र कुमार, रक्षा प्रयोगशाला जोधपुर के पूर्व निदेशक, वर्तमान में इस केंद्र के निदेशक के रूप में कार्यरत हैं, जो इसकी रणनीतिक पहलों और सहयोगात्मक प्रयासों की देखरेख करते हैं। डीआरडीओ केंद्र यहाँ शुरू की गई सभी अनुसंधान परियोजनाओं को वित्तपोषित करेगा, जिससे अनुसंधान के क्षेत्रों की पहचान करने और उनके निष्पादन के समन्वय के लिए भा.प्रौ.सं. जोधपुर संकाय सदस्य और विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के बीच सहभागिता की सुविधा मिलेगी।

रणनीतिक और युद्ध क्षेत्रों से सीधे जुड़े कई क्षेत्रों में भा.प्रौ.सं. जोधपुर की विशेषज्ञता, जैसे कि रेगिस्तानी संचालन के लिए तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता/आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, संवर्धित वास्तविकता (Augmented Reality), आभासी वास्तविकता (Virtual Reality), गतिशीलता और रोबोटिक्स (Mobility and Robotics), इसे डीआरडीओ के लिए उत्कृष्टता केंद्र (DIA- CoE) स्थापित करने के लिए एक उपयुक्त विकल्प प्रदान करती है।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में डीआरडीओ-उद्योग-शैक्षणिक उत्कृष्टता केंद्र (DIA- CoE) शिक्षा, उद्योग और रक्षा प्रतिष्ठान के बीच एक सहजीवी साझेदारी का प्रतीक है, जिसका उद्देश्य रक्षा प्रौद्योगिकी में जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए सामूहिक विशेषज्ञता और संसाधनों का उपयोग करना है। प्रतिभा और अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे का लाभ उठाकर, यह केंद्र अनुसंधान के चिन्हित क्षेत्रों में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने का प्रयास करने का लक्ष्य रखता है।



डीआरडीओ-उद्योग-अकादमिया उत्कृष्टता केंद्र (DIA- CoE)

"सिंधी सारंगी" को भौगोलिक संकेत (GI) टैग

जोधपुर सिटी नॉलेज एंड इनोवेशन फाउंडेशन (जे.सी.के.आई.एफ.), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर (भा.प्रौ.सं. जोधपुर), सेंटर ऑफ़ एकसीलेंस ऑन आई.पी. प्रबंधन एवं उद्यमिता स्कूल भा.प्रौ.सं. जोधपुर और कॉन्टैक्ट बेस (Banglanatak.com) ने एक उल्लेखनीय सहयोगात्मक प्रयास के अंतर्गत भौगोलिक संकेत (Geographical Indication) के रूप में "सिंधी सारंगी" के पंजीकरण के लिए आवेदन करके लंगा समुदाय की सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने के मिशन की शुरुआत की है।

भा.प्रौ.सं. जोधपुर में जे.सी.के.आई.एफ. द्वारा आयोजित एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम में, लंगा लोक सबरंगी संस्था, फलोदी के अध्यक्ष कासम खान लंगा और लंगा लोक संगीत कल्याण समिति, बरनावा जागीर के अध्यक्ष नेक मोहम्मद लंगा ने संयुक्त रूप से "सिंधी सारंगी" की रक्षा के लिए भौगोलिक संकेत (Geographical Indication) आवेदन पर हस्ताक्षर किए। कार्यक्रम का समापन कासम खान लंगा और नेक मोहम्मद लंगा के भावपूर्ण प्रदर्शन के साथ हुआ, जो हमारे सांस्कृतिक खजाने की सुरक्षा में सहयोग की एकता और भावना का प्रतीक है।



"सिंधी सारंगी" को भौगोलिक संकेत (Geographical Indication) कार्यक्रम के छायाचित्र

उपलब्धियाँ

डॉ. राज्यलक्ष्मी गरागा



सीईटीएसडी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर की सहायक प्रोफेसर डॉ. राज्यलक्ष्मी गरागा को उनके शोध 'पूर्वोत्तर भारत के सबसे बड़े शहर में पीएम10 और पीएम2.5 में धातुओं के विभिन्न स्रोतों का स्वास्थ्य जोखिम आकलन' के लिए ASCE पब्लिशिंग तकनीकी नोट स्पॉटलाइट में उल्लेखनीय मान्यता प्राप्त हुई है।

यह शोध पूर्वोत्तर भारत में वायु प्रदूषण और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बीच जटिल संबंधों पर केंद्रित है। डॉ. गरागा का समर्पण और विशेषज्ञता भा. प्रौ. सं. जोधपुर में अकादमिक उत्कृष्टता और नवाचार की भावना का उदाहरण है।

डॉ. नेहा जैन



एसोसिएट प्रोफेसर, बायोसाइंस और बायोइंजीनियरिंग विभाग विभाग की डॉ. नेहा जैन ने एक उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त की है। उन्हें उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित INSA यंग एसोसिएट 2024 अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

डॉ. जैन को राजस्थान में स्कूली बच्चों में तंत्रिका विज्ञान के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए प्रतिष्ठित आईबीआरओ (अंतर्राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान संगठन) विविधता अनुदान 2024 से भी सम्मानित किया गया है।

डॉ. अक्षय मौदगिल



भा.प्रौ.सं. जोधपुर के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के डॉ. अक्षय मौदगिल ने दुनिया भर के 57 शोध संस्थानों के 100 से अधिक विशेषज्ञों की टीम के साथ मिलकर अगली पीढ़ी की प्रिटेबल सेंसर तकनीकों के लिए एक व्यापक रोडमैप प्रकाशित किया है। इस शोध कार्य को कई अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी मीडिया हाउस जैसे PHYS.org, AZO Sensors, NanoWerk आदि द्वारा कवर और प्रकाशित किया गया है, और Altmetric द्वारा स्कोर किए गए सभी शोध आउटपुट में शीर्ष 5% में स्थान दिया गया है।

कविता

“नव सृजन”

इन रंगों की उलझी माया में, यदि कर्तव्यों का मान शून्य ।

अतिशयोक्ति निहित संस्थानों में, यदि दूरदृष्टि का भाव शून्य ।

निज स्वार्थ सहित हो सोच बहुत, पर सहित का यदि अंश शून्य ।

नव सृजन विचारक पीढ़ी में उत्पाद विहित उत्साह शून्य ।

बहुतेरे विकसित श्रेष्ठों में, कल्याण निहित चैतन्य शून्य ।

सामर्थ्यवान इस जनगण में, यदि समरसता का मान शून्य ।

चिंतित होना स्वाभाविक है यदि, निर्धन निर्बल प्रति प्रेम शून्य ।

यदि सकल सुधारों की इच्छा, लेती है करवट तन मन में ।

हो द्वेष शून्य, आलस्य शून्य, उत्साह बहुत, लालसा शून्य ।

रचयिता : प्रो. श्रीप्रकाश तिवारी,
प्रोफेसर, विद्युत् अभियांत्रिकी विभाग,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

- “खुशी तब होती है जब आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सबमें सामंजस्य हो ।”
- महात्मा गांधी
- "जीवन कोई समस्या नहीं है जिसे सुलझाया जाना है, बल्कि एक वास्तविकता है जिसे अनुभव किया जाना है ।" - सोरेन कीर्केगार्ड
- "अगर मैं महान चीजें नहीं कर सकता, तो मैं छोटी चीजों को महान तरीके से कर सकता हूँ ।"
- डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर
- जो सब की प्रशंसा करता है, वह किसी की प्रशंसा नहीं करता । - सैमुअल जॉनसन

कविता

रोहिड़ा के फूल

ओ रोहिड़ा के फूल,
तुमसे आया फिर बसंत*
कि तुम फिर आये बसंत से?

ओ रोहिड़ा के फूल,
तुमने प्रेम उपजाया फिर
कि तुम फिर उपजे प्रेम* से?

ओ रोहिड़ा के फूल,
तुम्हें दिया जीवन थार ने
कि दिया जीवन थार को तुमने?



* वर्ष 2024 में 'बसंत पंचमी' 14 फरवरी को थी जिस दिन 'प्रेम दिवस' (वैलेंटाइन डे) भी मनाया जाता है।

लेखक एवं छायाकार

प्रो. जय नारायण त्रिपाठी
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

कविता

टेसू के फूल

उस देस में
रहता था प्रेमी
जहाँ उगते थे
टेसू के फूल;
रहा करती थी
प्रेमिका वहाँ
उगते थे जहाँ
रोहिड़ा के फूल ।

फैलाकर विशाल बाँहें
थार ने प्रेम को
देना चाहा विस्तार,
अरावली ने नहीं दिया
दोनों को मिलने कभी ॥



लेखक एवं छायाकार
प्रो. जय नारायण त्रिपाठी
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर

अप्रैल 2024 से जून 2024 के दौरान संस्थान में शामिल होने वाले नये संकाय सदस्य



प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल
निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर
प्रोफेसर, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग



डॉ. कौडिन्य एन.टी.बी.एन.
सहायक प्रोफेसर
धात्विकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी विभाग



डॉ. आसिफ इकबाल
स्कूल ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस विभाग



डॉ. पंकज शेषराव चव्हाण
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी केंद्र

अप्रैल 2024 से जून 2024 के दौरान संस्थान में शामिल होने वाले नये स्टाफ सदस्य



डॉ. नेहा शर्मा
चिकित्सा अधिकारी
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र



खम्मा घणी!!

अप्रैल-जून तिमाही 2024



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर